Regd. No. 1340.

श्रीः

संख्या
६
भाद्रपद

मासिक पत्र

वर्ष
१
सं २०१३

ज्योतिष मार्तण्ड

वार्षिक मूल्य
५)

मासिक मूल्य
॥)

सम्पादक
पं: राम शरण ज्योतिषाचार्य

गतांक से आगे

राशि विचार

(प्रौफेसर कृष्णाचन्द्र जोशी (एम. ए.) डी. ए. वी कालेज, जालन्धर)

(नवमां अनुच्छेद)

राशियों की ह्रस्वदीर्घादि संज्ञा—मेष, वृष, और कुम्भ राशियें ह्रस्व अथवा छोटे आकार वाली हैं। मिथुन, कर्क, धनु, मकर और मीन समान (मध्यम) आकार वाली हैं। सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक दीर्घ (लम्बे या बड़े) आकार वाली राशियें हैं। इस विभाजन द्वारा प्रायः शरीर और उसके भिन्न भिन्न अंगों के छोटे, बड़े या मध्यम परिमाण का ज्ञान होता है। प्रश्नशास्त्र में इस की सहायता से चोरी की वस्तु के आकार, परिमाण तथा स्थूल, सूक्ष्म, कान्तियुक्त, गोलाकार वा वर्गाकार आदि का पता लगाया जा सकता है।

(दशवां अनुच्छेद)

राशियों की सजल निर्जलादि संज्ञा—कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ और मीन सजल राशियें हैं और शेष राशियें निर्जल अथवा शुष्क हैं। अर्थात् मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या और धनु शुष्क या निर्जल राशियें हैं। इनका प्रयोग यह जानने के लिए किया जाता है कि अमुक व्यक्ति का स्वभाव कैसा है—सस्नेह वा शुष्क, और उसका शरीर अथवा उसके अंग पुष्ट हैं या कृश् इत्यादि। वर्षा ज्ञान तथा ऋतुसमाचार का पता भी इसी राशि भेद द्वारा ही किया जाता है।

(ग्यारहवां अनुच्छेद)

राशियों की द्विपदचतुष्पदादि संज्ञा——मिथुन, कन्या, तुला, धनुराशि का पूर्वार्ध तथा कुम्भ द्विपद—दो पैरों वाली—राशियें हैं। द्विपद राशियों में मनुष्य, देवता, पक्षी आदि शामिल है। मेष, बृष, सिंह और धनुराशि का उत्तरार्ध चतुष्पद—चार पैरों वाली—राशियें हैं। इन में मेढा, बैल, शेर, बिल्ली, कुत्ता आदि पशुओं की गणना की जाती है। कर्क, वृश्चिक, मकर और मीन छाती के बल से ससर कर चलने वाली—सरीसृप (Reptile)—राशियें हैं। इनमें सर्प, कीट, किरली आदि शामिल हैं। कीट राशियों में मीन राशि अपद—पांव रहित (Footles)—है, और शेष बहु पद—बहुत पाँव वाली—राशियें हैं। मकर राशि का ऊपरी भाग मृगमुखी होने के कारण चतुष्पद है और निचला भाग कीट संज्ञक है। चुराया गया जीव द्विपद, चतुष्पद या कीट-संज्ञक है इस बात का अनुमान इस अनुच्छेद द्वारा लगाया जाता है। दुःखदायक अथवा मृत्यु का कारक (Agency) सरीसृप या मनुष्य जाति है अथवा पशु जाति इस बात का निर्णय भी इसी की सहायता से किया जाता है।

(बारहवां अनुच्छेद)

राशियों के तत्त्व——साकार प्रकृति का आविर्भाव चार मूल तत्त्वों—अग्नि, पृथ्वी, वायु और जल—द्वारा माना जाता है। अतः मेषादि राशियों की प्रकृति भी क्रमशः आग्नेय, पार्थिव, वायवी और जलीय है। अर्थात्

मेष, सिंह और धनु राशियें आग्नेयत्रयी है, वृष, कन्या और मकर पार्थिवत्रयी; मिथुन, तुला और कुम्भ वायवत्रयी; तथा कर्क, बृश्चिक और मीन जलीयत्रयी राशियें हैं।

ग्रहों की युति, दृष्टि तथा राशियों के तत्त्वों द्वारा मनुष्य की प्रकृति का पता चलता है। आग्नेय, पार्थिव, वायवी तथा जलीय राशियों द्वारा क्रमश: सोद्योग (Energitic), व्यावहारिक (Practical), बौद्धिक (Intellectual) तथा भावात्मिक (Emotional) प्रकृतियों का बोध होता है। आग्नेय राशियों का सम्बन्ध मनुष्य की आत्मशक्ति (Spirit) से, तथा जलीय राशियों का सम्बन्ध उसके भावों या वलवलों (Emotions) से है। आग्नेय राशियें जातक को उत्पलावी (Buoyant) आत्मविश्वासी (Self confident), सोत्साही, निष्कपट, कठोर तथा आक्रात्मक (Aggressive) बनाती हैं। पार्थिव राशियें मनुष्य को नित्योद्योगी (Plodding), सहनशील (Patient) और भौतिक अथवा अपार मार्थिक बनाती हैं। वायवी राशियें प्राय: दयालु, सस्नेह और अनुरागी बनाती हैं। जलीय राशियें संकोची, प्रापक (Receptive) संलग्नशील और दृढ़ संकल्पी बनाती हैं। यह चतुर्भुज विभाजन हमारे गिर्द के सभी विषयों में हमारे और दूसरों के मनों में, स्थूल और सूक्ष्म शरीरों में, विरोध अथवा अविरोध रूप में, कार्य कर रही हैं और यही कर्म ब्रह्मांड का मूलतत्त्व है।

यह विभाजन न केवल ऋतुसमाचार तथा फ़सलों की दशा को चिरकाल पहिले बताने में महत्त्वपूर्ण है प्रत्युत् इस का उपयोग राजनीतिक तथा समाजिक गठजोड़ों, वैवाहिक सम्बन्धों, भाईवाली (Partnerships), मालिक और नौकर तथा गुरु-शिष्य के पारस्परिक संसर्ग सम्बंधी बात का फैसला करने में सहायी होता है। व्यक्तियों तथा दलों के तत्त्वों में यदि मित्रता हो (जैसे कि पृथ्वी और जल में, या अग्नि और वायु में) तो उन व्यक्तियों और दलों में पारस्परिक प्रीति, एकता, और अनुरूपता होगी। और यदि उनके तत्त्वों में विरोध या शत्रुता हो (जैसे कि अग्नि और जल में) तो उन व्यक्तियों और दलों में भी विरोधता अथवा शत्रुता होगी।

(तेहरवां अनुच्छेद)

राशियों की पित्तादि धातुएँ—पित्त, बात, धातुसम (पित्त, बात और श्लेष्म का मिश्रण) और कफ़ चक्र क्रम अनुसार मेषादि राशियों की धातुएँ या प्रकृतिएँ (Humours) हैं। अर्थात् मेष, सिंह और धनुराशि की प्रमुख प्रकृति 'पित्त' (Bile) है। वृष, कन्या और मकर की प्रमुख प्रकृति 'बात' (Wind) है। मिथुन, तुला और कुम्भ की धातुसम (पित्त, बात और श्लेष्म का मिश्रण) प्रकृति है। एवं कर्क, बृश्चिक और मीन राशि की प्रधान प्रकृति 'कफ' (Phlegm) है।

डाक्टर. ए. वी. कीथ साहेब का कथन है कि 'इस बात को अवश्य नोट कर लेना चाहिए कि धातुओं का सिद्धान्त जिनकी अव्यवस्था का क्षोभ के कारण ही रोगों की उत्पत्ति होती है। भारतीय और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों द्वारा मान्य[5]।' किन्तु डाक्टर पी. सी. रे इस विचार को रद करता हुआ लिखता है कि "हिन्दु प्रणाली का आधार तीन-बात, पित्त और कफ—धातुओं पर है, किन्तु यूनानी प्रणाली का आधार चार—रक्त, पित्त, जलीय, कफ,—धातुओं पर है। यह दोनों में प्रधान अन्तर का घोतक है[6]।' डाक्टर रे आगे चल कर लिखता है कि "चाहे कुछ भी हो धातु द्वारा रोगनिदान कम-से-कम बहुत दूर पूर्व ऋग्वेद-काल तक का ग्रहण किया जा सकता है (ऋग्वेद

५. हिस्ट्री आफ़ संस्कृत लिटरेचर, पृष्ट ५१३

६. हिस्ट्री-आफ़ हिन्दू कैमिस्ट्री, पृष्ट ४७ (भूमिका)

१. ३४. ५), अथर्ववेद, जिसे आयुर्वेद का पिता समझा जा सकता है, में भी हमें कुदरती तौर पर ऐसे बहुत से प्रमाण उपलब्ध होते हैं जो धातुओं के प्रकोप द्वारा रोगों की उत्पत्ति के सूचक हैं। इन में से 'बातकृत्' आदि ऐसे पद मिलते हैं जिसका अर्थ है 'बात (वायु) के प्रकोप के कारण उत्पन्न हुआ रोग............''

चिकित्साशाला जाने बिना ही इस अनुच्छेद द्वारा रोगनिदान और उसके कारणादि का बोध होता है।

(चौदहवां अनुच्छेद)

राशियों की जाति——क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र और ब्राह्मण चक्रक्रमानुसार मेषादि राशियों की जाती है। अर्थात् मेष, सिंह और धनु की जाती क्षत्रिय है और इनका विशेष सम्बंध रक्षा-बिभाग अर्थात् पोलीस, मिल्टरी, युद्ध आदि से है। वृष, कन्या, मकर की जाति वैश्य है और इनका प्रवल सम्बन्ध वणिज व्यापार, लेन देन, कर विभाग, बैंक, मार्कीट से है। मिथुन, तुला और कुम्भ की जाति शुद्र है जिनका प्रमुख सम्बन्ध समाज सेवा, नौकरी, खेती बाड़ी, श्रम आदि से है। कर्क, वृश्चिक और मीन की जाति ब्राह्मण है जिनका विशेष सम्बन्ध पाठन, शुभकर्म, दृढ़ विचार, कल्यानकारी योजनाओं से है।

इस चतुर्विध जाति-विभाग की सहायता से दैवज्ञ लोग शत्रु और मित्र, अधिकारी और जन वर्ग, व्यापार संबन्धी भाईवालों और चोर आदि की जाति और प्रमुख वृत्ति का निर्णय कर सकते हैं।

(पन्द्रहवां अनुच्छेद)

राशियों की धातुमूल जीवादि संज्ञा——प्रकृति को तीन मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है— धातुवर्ग, मूलवर्ग और जीववर्ग। सोने से लेकर मिट्टी तक को धातु, मनुष्य से ले कर कीट पतंगादि को जीव, और बृक्ष से लेकर तृण तक को मूल कहते हैं। जैसे प्रकृति में वैसे ही ज्योतिषशास्त्र में भी राशियों को धातुमूलजीवादि तीन भागों में विभक्त किया गया है। चरराशियें अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर, धातु संज्ञक हैं। स्थिर राशियें अर्थात् बृष, सिंह, कुम्भ और वृश्चिक मूलसंज्ञक हैं। द्विः स्वभाव राशियें अर्थात् मिथुन, कन्या, धनु और मीन जीव संज्ञक हैं।

इस त्रिविध भौमिकीय विभाजन (Geological division) की सहायता से इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रश्न कर्त्ता के मन में धातु, मूल अथवा जीव संज्ञा में से किस का विचार है। चुराई गई वस्तु का भी अनुमान लगाया जा सकता है कि उसका सम्बन्ध धातु, मूल या जीव से है, इत्यादि।

————

"भाद्रपद मास में गुड़ का भविष्य विचार"

(चिमन लाल शर्मा ज्योतिषी कलां वज़ार पुरानी सराय जालन्धर शहर)

भादों १ वीरवार तेज, २ को मंदा, ३ को तेज, ५ और ६ मंदा ७ से ९ तक तेज, १० को मंदा, १२ से १५ तक तेज, १६ को मंदा, १७ को तेज, १९ और २० को मंदा, २१ से २३ तक तेज, २४ से २७ तक मंदा, २८ को तेज, २९ मंदा, ३० तेज, ३१ भादों को मंदा।

७. हिस्ट्री आफ़ हिन्दु कैमिस्ट्री, पृष्ट ३५ (भूमिका)

भाद्रों मास का भविष्य फल

इस मास में मंदा तेज़ी की दोनों ग्रह चालें पाई जाती हैं। गुड़ शकर खांड रसदार पदार्थों की मार्कीट सूर्य का सिंह राशि पर गमन, गुरु का अस्त होना, भौम का वक्र गति में चलना १६ अगस्त से ३१ अगस्त तक तेज़ी के सूचक हैं इन दिनों में व्यापारियों को हरघटे भाव माल खरीद करना चाहिये। १ सितम्बर से ८ सितम्बर तक मार्कीट कमी बेशी में रहेगी उपरान्त मन्दा रहेगा।

दैनिक विचार

१६ अगस्त को गुड़ शक्कर खांड रसदार पदार्थों की मार्कीट मध्याह्न तक तेज़ उपरान्त मन्दा रहेगा ९, अगस्त को मार्कीट मन्दी रहेगी। १८ को मध्याह्न उपरान्त मन्दा रहेगा। २० को मध्याह्न तक तेज़ उपरान्त मन्दा चलेगा। २१ को भी मार्कीट मध्याह्न तक तेज़ उपरान्त मन्दी रहेगी २२ अगस्त को मार्कीट खुलते ही कुछ तेज़ होकर फिर मन्दी हो जाएगी २३ को मध्याह्न तक तेज़ उपरान्त मन्दा। २४ को मध्याह्न उपरान्त मार्कीट तेज रहेगी। २५ को मार्कीट मन्दी रहेगी बन्द बाज़ार के लगभग कुछ तेज़ी आएगी। २६ को मार्कीट खुलते ही तेज़ हो पर फिर मन्दी हो जायगी। २७ को मध्याह्न तक तेज़ उपरान्त मन्दा। २८ को मध्याह्न उपरान्त तेज़ २६ को मध्याह्न उपरान्त मन्दा पहिले तेज़ रहे। ३० को मध्याह्न तक मन्दा उपरान्त तेज़ रहे। ३१ को मार्कीट मंदी रहे पिछले यहां कुछ तेज़ी आएगी। १ सितम्बर को मन्दा रहेगा २ को मध्याह्न उपरान्त मन्दा रहेगा पहिले तेज़ रहेगा। ३ को मार्कीट मन्दी रहेगी पिछले पहर कुछ तेज़ी आएगी ४ को मध्यान्त्र उपरान्त मन्दा रहे। ५ को मार्कीट मन्दी रहेगी। ६ को तेज़ी रहेगी। ७ को मार्कीट तेज़ रहेगी। ८ को मन्दी रहेगी ९ को तेज रहेगी, १० को भी तेज़ रहेगी।

चणे मटरा, गवारा इत्यादि

चणे मटरा गवारा इत्यादि की मार्कीट १६ अगस्त से २८ अगस्त तक तेज़ रहेगी फिर कुछ मन्दी रहेगी। इसमें, २१ अगस्त को अगस्त को चणे मटरा मध्याह्न तक तेज़ रहेंगे, २३ को तेज़, २४ को मध्याह्न उपरान्त तेज़, २६ को खुलते ही कुछ तेज़ रहकर फिर कुछ मन्दे रहेंगे। २७ को मध्याह्न तक तेज़ उपरान्त मन्दे ३० को मध्याह्न उपरान्त तेज़ी रहेगी ३१ को मध्याह्न उपरान्त तेज़ी रहेगी २१ सितम्बर को उपरान्त मन्दा रहेगा पहिले मार्कीट तेज़ी में रहेगी ३ सितम्बर को मार्कीट मध्यान्त्र तक तेज उपरान्त मन्दी रहेगी ६ सितम्बर को मार्कीट तेज़ी में रहेगी ७ को भी तेज़ी में रहेगी।

सोना चांदी पित्तल आदि धातें

सोना चांदी पित्तल आदि की मार्कीट १९ अगस्त से २९ अगस्त तक तेज़ २९ अगस्त से ४ सितम्बर तक कमी वेशी उपरान्त कुछ मन्दा रहेगा। इसमें २० अगस्त २३ अगस्त २७ अगस्त, २८ अगस्त को मार्कीट तेज़ रहेगी ३१ अगस्त को मन्दी रहेगी १ सितम्बर को मार्कीट का रुख मन्दा रहेगा। २ को मध्याह्न तक तेज़ उपरान्त मन्दा ४ को मध्याह्न तक तेज उपरान्त मन्दा रहे। ५ को मार्कीट मन्दी रहेगी।

"हिंदु संवत् वर्ष मास और वार"

(पं० चिमन लाल ज्योतिषी गणित मार्तण्ड कोट छींवां पुरानी सराय जालन्धर शहर)

(गतांक से आगे)

सायन और निरयण, इनमें निरयण वर्ष गणना केवल भारत में प्रचलित है। सभी देशों में सायनमान एकसा माना जाता है, क्यों कि सायनमान दृश्य गणित पर निर्भर है। निरयण गणना केवल यंत्रों के द्वारा ही संभव है, अतः निरयण वर्ष के मान में मतभेद है। विभिन्न ज्योतिषाचार्यों के मतानुसार विभिन्न वर्षों के कालमान की नीचे एक तालिका दी जा रही है। इससे वर्षों का अन्तर समझ में आ सकेगा।

	सिद्धान्त			कालमान				
		वर्ष		दिन,	घटी,	पल,	विपल,	प्रतिवि०,
१.	सूर्यसिद्धान्त	एक	—	३६५,	१५,	३१,	३१,	२४,
२.	वेदांग ज्योतिष	,,	—	३६६,	०	०	०	०,
३.	आर्य भट्ट	,,	—	३६५,	१५,	३१,	१५,	०,
४.	ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त	,,	—	३६५,	१५,	३०,	२२,	३०,
५.	पितामह सिद्धान्त	,,	—	३६५,	२१,	१५,	०,	०,
६.	ग्रहलाघव	,,	—	३६५,	१५,	३१,	३०,	०,
७.	ज्योतिर्गणित (केतकर)	,,	—	३६५,	१५,	२२,	५७,	०,
८.	लांकियर (नाक्षत्र)	,,	—	३६५,	१५,	२२,	५२,	३०,
९.	लांकीयर (मंदकेन्द्र)	,,	—	३६५,	१५,	३४,	३४,	०,
१०.	लांकियर (सायन)	,,	—	३६५,	१४,	३१,	५६,	०
११.	कोपर निकस (सायन)	,,	—	३६५,	१४,	३९,	५५,	०
१२.	टालमी (सायन)	,,	—	३६५,	१४,	३७,	०,	०
१३.	मेटन (नाक्षत्र)	,,	—	३६५,	१५,	४७,	२,	१०,
१४.	बेबोलियन (नाक्षत्र)	,,	—	३६५,	१५,	३३,	७,	४०,
१५.	शियोनिद	,,	—	३६५,	१४,	३३,	३२,	४५,
१६.	थेषित	,,	—	३६५,	१५,	२२,	५७,	३०,
१७.	आचार्य आप्टे (उज्जैन)	,,	—	३६५,	१५,	२२,	५८,	०,
१८.	विष्णु गोपाल नवाये	,,	—	३६५,	१४,	३१,	५३,	२५,
१९.	आधुनिक यूरोपियन	,,	—	३६५,	१५,	२२,	५६,	५२,
२०.	चान्द्र	,,	—	३५४,	२२,	१,	२३,	०,
२१.	सावन	,,	—	३६०,	०,	०,	०,	०,
२२.	बार्हस्पत्य	,,	—	३६१,	१,	३६,	११,	०,
२३.	नाक्षत्र	,,	—	३७१,	३,	५२,	३०,	०,
२४.	सौर (जो प्रचलित है)	,,	—	३६५,	१५,	३१,	३०,	०,

ऊपर के वर्षों का यदि कल्पों तक की गणना में उपयोग किया जाय तो उनमें से सूर्य सिद्धान्त का मान ही भ्रमहीन एवं सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित होता है। सृष्टि संवत् के प्रारंभ से यदि आज तक का गणित किया जाय तो सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक दिन का भी अन्तर नहीं पड़ता। मैंने चैत्र शुक्ल तृतीया सं० २०१३ (अप्रैल १३, १९५६) को लेकर गणित किया, सूर्य सिद्धान्त के अनुसार उस दिन शुक्रवार आता है और यही दिन है भी, किंतु यदि प्रचलित आधुनिक योरोपियन गणना से इतना लंबा गणित हो तो साढे चार लाख (४५००००) दिनों का अन्तर पढ़ता है, क्यों कि सूर्य सिद्धान्त से प्रतिवर्ष इस गणना में साढे आठ पल से भी अधिक का अंतर है। सूर्य सिद्धान्त के प्राचीन मान से आधुनिक मान का अन्तर ८ पल ३४ विपल का होता है। प्राचीन अयनगति ६० पल और आधुनिक अयनगति ५० पल २६ विपल होने से गति का अन्तर ९ पल ३४ विपल होता है। इस प्रकार ९ पल ३४ विपल तथा ८ पल ३४ विपल में केवल एक पल का अंतर होता है। इस प्रकार सूर्य सिद्धान्त के मान में एक पल कम करके गणित करने से ५००० वर्ष तक के दिनादि सब ठीक मिलते हैं। यही बात भारतीय सूर्य सिद्धान्त की पूर्णता सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है। भारतीय वर्ष गणना के लिये यह अभ्रान्त सिद्धान्त ही प्रयुक्त होना चाहिये।

मास

वर्ष गणना के जैसे कई भेद है वैसे ही मास गणना के भी चार भेद है (१) सौर (२) सावन (३) चान्द्र, और (४) नाक्षत्र। इनमें से नाक्षत्र और सावन मास विशेषत: वैदिक कार्यों में देखे जाते है। सौर एवं चान्द्र मासों का व्यवहार लोक में चलता है। इनमें भी सौर मास खगोल एवं भूगोल से सम्बन्ध रखने वाले हैं। ये क्षय वृद्धि से रहित तथा गणना में सुगम हैं। इनके नाम भी आकाशीय नक्षत्रों के अनुसार हैं। आकाश में २७ नक्षत्र है, इन नक्षत्रों के १०८ पाद होते हैं। इनमें से नौ पादों की आकृति के अनुसार मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन ये बारह सौर मास होते हैं। भूमि पर भी इन मासों (राशियों) की रेखा स्थिर की गई है, जिसे 'क्रांति' कहते हैं। ये क्रान्तियां विषुवत् रेखा से २४ उत्तर में और २४ दक्षिण में मानी जाती है। उत्तरायण में विषुवत् रेखा से उत्तर १२ अंश तक मेष, २० अंश तक वृष, २४ अंश तक मिथुन, २४ उत्तर क्रान्ति कर्क रेखा और फिर उलटे क्रम से २० अंश तक कर्क, १२ अंश तक सिंह तथा विषुवत् रेखा तक कन्या राशि होती है। इसी प्रकार दक्षिणायन में विषुवत रेखा से दक्षिण १२ अंश तक तुला, २० अंश तक वृश्चिक २४ अंश तक धन और २४ अंश को मकर रेखा कहते हैं। फिर विपरीत क्रम से २० अंश तक मकर, १२ अंश तक कुंभ और विषुवत् रेखा तक मीन राशि होती है। मासों का यह स्थान सूर्य गति के अनुसार है।

जैसे सौर मास का सम्बन्ध सूर्य से है, वैसे ही चान्द्र मास का संबन्ध चन्द्रमा से है। उदाहरण के लिये अमावस्या के पश्चात् चन्द्रमा जब मेषराशि और अश्विनी नक्षत्र में प्रकट होकर प्रतिदिन एक एक कला बढ़ता हुआ १५ वें दिन चित्रा नक्षत्र में पूर्णता को प्राप्त करता है, तब वह मास चित्रा नक्षत्र के कारण चैत्र कहा जाता है। जिस पक्ष में चन्द्रमा क्रमशः बढ़ता हुआ शुक्लता—प्रकाश को प्राप्त करता है, वह शुक्ल पक्ष और जिसमें घटता हुआ कृष्णता—अंधकार बढ़ाता है, वह कृष्ण पक्ष कहा जाता है। मास का नाम उस नक्षत्र के अनुसार होता है, जो महीना भर सायंकाल से प्रातः काल तक दिखलायी पड़े और जिसमें चन्द्रमा पूर्णता प्राप्त करे।

चान्द्र वर्ष सौर वर्ष से ११ दिन ३ घटी ४८ पल कम होता है। सौर वर्ष से चन्द्र वर्ष का सामंजस्य रखने के लिये ३२ महीने १६ दिन ४ घड़ी पर एक चान्द्र मास की वृद्धिमानी जाती है। इस पर भी पूरा सामंजस्य न होने से लगभग १४० या १९० वर्ष के बाद एक चान्द्र मास का क्षय माना जाता है, किंतु जिस वर्ष में क्षय मास

होता है, उस वर्ष में क्षय मास से तीन मास पूर्व के और तीन मास पश्चात् के दोनों चान्द्रमासों की वृद्धि होती है। इस प्रकार उस वर्ष दो अधिक मास भी होते हैं। क्षयमास कार्त्तिक, मार्गशीर्ष और पौष इन तीनों मासों में से ही कोई होता है, क्योंकि इन्ही महीनों में सौर मास चान्द्रमास सेन्यून हो सकता है। जब दो अमावस्याओं के बीच में सूर्य की सक्रान्ति न पड़ती हो तब वह चन्द्रमास बढ़ जायेगा और जब दो अमावस्याओं के बीच में सूर्य की दो संक्रान्तियां पड़ जाये तो वह चन्द्रमास क्षय माना जाता है। क्यों कि समस्त पुण्यकर्म तिथियों के अनुसार होते हैं, अतएव धार्मिक कृत्यों में तो चन्द्रमास ही उपयोग में आ सकता है। राजनैतिक कार्यों में सौरमास का उपयोग होना चाहिये, क्यों कि उसमें तिथियों के घटने बड़ने की बात न होने से हिसाब ही ठीक रखा जा सकता है। शेष आगामि अंक में देखें।

"फलित ज्योतिष के प्रत्यक्ष अनुभव"

(पं० चिमन लाल ज्योतिषी गणित मार्तण्ड कलां वजार पुरानी सराय जालन्धर शहर)

ज्योतिष शास्त्र के अठारह सिद्धान्त प्रसिद्ध हैं। कारण ग्रंथ तथा अनेक फलित ग्रन्थ हैं, परन्तु फल विचार में मतभेद भी है। अतः फल ठीक न मिलने से लोगों की श्रद्धा में न्यूनता आना स्वाभाविक है। शास्त्रा देश के साथ साथ अनभव के आधार पर फल बतलाने वाला ज्योतिर्विद अपना मान तो बढ़ायेगा ही, साथ ही इससे ज्योतिष शास्त्र का गौरव भी उन्नत होगा, कई वर्षों के अनभव से मझे जन्म और वर्ष सम्बन्धी जो चमत्कारिक अनुभव प्राप्त हुए हैं उनमें से कुछ यहां लिख रहा हूं। आशा है कि ज्योतिर्विज्ञान वेत्ता तथा ज्योतिष शास्त्र में रुचि रखने वाली जनता इससे प्रसन्न होगी, क्यों कि प्रत्येक विद्या के गुप्त रखने के कारण ही विद्या का ह्रास और लोप हुआ। इसके अनेक उदाहरण हैं।

(१) फलित ग्रंथों में वृहत्पाराशरी के राजयोग शत प्रतिशत ठीक मिलते हैं।
(२) जन्म में छटे घर चन्द्रमा प्रमेह (बीस प्रकार में से कोई भी) रखता है।
(३) सप्तम मंगल अर्श (खूनीववासीर) का सूचक है।
(४) सूर्य शुक्र का रिप्रभाव (६) में योग मूत्र कृच्छ करता है।
(५) शुक्र मंगल का अष्ठम घर में योग उपदेश करता है।
(६) लग्न के सूर्य प्रायः अर्द्ध शिरकी पीड़ा देता है।
(७) सप्तम केतु पथरी दर्द एवं गुदादि में शल कारक है।
(८) जन्म लग्नेश शुभ युक्त दृष्ट केन्द्र वा त्रिकोण में मित्र क्षेत्री प्रायः आजीवन सुखी, मानयुक्त तथा प्रतापी बनाता है।
(९) पंचमेश दशमेश का सम्बन्ध प्रवल राजयोग करता है।
(१०) पत्नी का सप्तम सूर्य हो तो वह पतिद्वारा अनादर पाती है।
(११) वर्ष में सप्तमेश का लग्न में पढ़कर गुरु दृष्ट होना विशेष उन्नति का सूचक है।

(नोट) फलादेश करने वाले ग्रह बलवान् होने चाहिये अर्थात् अस्तादि नहीं हो तब फलादेश पूर्ण रूप से होता है।

ज्योतिष के प्रेमियों की मनोकामना पूरी होने लगी

क्योंकि

प्रोफैसर कृष्णचन्द्र जोशी ऐम. ए.

ने

प्रश्नशास्त्र के अचूक ग्रन्थ

भवन दीपक

की

राष्ट्रभाषा में वैज्ञानिक, आलोचनात्मक, तुलनात्मक गवेषणापूर्ण और अन्वेश्नात्मक भाष्य करके सब टीकाकारों को मात कर दिया है। स्थान २ पर उदाहरणों और टिपणियों से अलङ्कृत, चार्टों से विभूषित और चित्रों से सुसज्जित करने के अतिरिक्त विद्वान् भाष्यकार ने भूमिका में वैज्ञानिकों की रचनाओं से हवाले देकर सिद्ध किया है कि ज्योतिष कितनी महान् साइन्स है। दैवज्ञों और ज्योतिष प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी और ज्योतिष-संसार में हलचल मचा देने वाली यह टीका जल्दी छप कर आने वाली है। अपनी प्रति सुरक्षित कराने के लिए हमें लिखें ताकि हम आर्डर के अनुसार आप को पुस्तक भेज सकें।

मूल्य १।।।) डाक व्यय पृथक।

मैनेजर कार्यालय ज्योतिष मार्तण्ड, माई हीरां गेट (जालन्धर)

ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तके

ज्योतिष रत्नाकर :—भा. टी. इस में राशिशील ग्रहशाल, इष्ट संशोधन, निषेक, प्रसूति अप्रकाशक ग्रह आदि तरङ्गें हैं। इस पुस्तक के पास होते हुए ऊपर लिखित विषयों पर अन्य पुस्तकें देखने की आवश्यकता नहीं। इस पुस्तक के पढ़ने से मनुष्य एक धुरन्धर ज्योतिषी बन सकता है मूल्य ४) रु०।

ज्योतिषी की प्रथम पुस्तक :- यह ज्योतिष पढ़ने वाले विद्यार्थी के लिये अत्युत्तम है यह केवल भाषा में है इसमें टेवा बनाने और वर्ष फल बनाने की विधि भी दी हुई है मूल्य ॥।) आने।

तनुभाव प्रकाश—भा टी. १) रु०

सहज भाव प्रकाश भा. टी १॥) रु०

स्त्री भाव प्रकाश भा. टी. १।) रु०

दशम भाव प्रकाश भा. टी. १।) रु०

उपरोक्त भावों में उस उसभाव सम्बन्धी फलादेश विस्तार पूर्वक दिया हुआ है प्रत्येक भाव १०० १५० पृष्ठ का है। एक ग्रह से ५ ग्रही योग भी दिए हुवे हैं। उपरोक्त भावों के पास होने पर उन भावों के फल बतलाने के लिए अन्य पुस्तकों को देखने की आवश्यकता नहीं।

वर्षफल चन्द्रिका :—वर्षफल बनाने की विधि वृहतपंचवर्गी तथा उसका फल मुन्था, दशा, भाव आदि फल तथा योग फल भी दिए हुवे हैं और इसमें प्रत्येक बात का उदाहरण साथ दिया हुआ है।

यह हिन्दी भाषा में है। मूल्य २) रु०

लग्न सारिणी समूच्चय :—प्राय: प्रत्येक शहर की लग्न सारिणीयां हैं। जो कि जन्म देशीय शुद्ध लग्न बनाने के लिये लाभ प्रद है। और इसमें दशम स्पष्ट बिना गणित के ही हो जाता है। नतोन्नतांश की आवश्यकता भी नहीं रहती। और जन्मदेशीय दिनमान लोकल सूर्योदय भी निकल आता है। उदाहरण साथ दिया हुआ है मूल्य २) रु०

ग्रह विज्ञान :—इसमें ५०० वर्ष के ग्रह स्पष्ट करने की सारिणीयां दी हुई हैं विधि सुगम है उदाहरण सहित साथ दिए हुए हैं इस से किए हुए ग्रह स्पष्ट सूर्य सिद्धान्त के अनुसार ठीक मिलते है। मूल्य ८॥ रु०

लग्न मन्दाकिनी: इसमें लग्नस्पष्ट, सूर्योदयास्त निकालना तथा दशम स्पष्टादि करने की विधि उदाहरण सहित दी हुई हैं साथ में कुछ अक्षांशों की लग्न सारिणीयाँ भी दी हुई हैं मूल्य १॥) रु०।

विवाहपद्धति :—भा टी इसमें थोड़ा पढ़ा हुआ भी विवाह संस्कार को शास्त्रोक्त रीति अनुसार करा सकता है पुष्पांजलियां और सप्तपदीयाँ विस्तार पूर्वक दी हुई है। मूल्य २) रु०।

कात्यायनी शांति भा. टी. विधि सहित ।=)।

कार्तिक प्रसूता शांति विधि सहित ।)।

जन्म दिन पूजा पद्धति विधि सहित ।)।

गायत्री मंत्र जप विधि ॥)।

शिव मंत्रावली २)।

दुर्गा सप्तशती भा टी गल्ज ३) रु० रफ २॥ रु०।

इसमें पाठ विधि तथा हवन विधि और श्लोकों के साथ आहुतियों के लिए पदार्थ भी दिए हुए हैं।

गोदान ।)।

ज्योतिष तत्व भा. टी. ज्योतिष शास्त्र का त्रयात्मक ग्रन्थ दो भागों में मूल्य ५०) रु०।

निम्नलिखित पुस्तकें उर्दू की हैं।

आईना किस्मत प्रथम भाग। द्वितीय भाग तृतीय भाग। मूल्य प्रत्येक भाग २) रु०। इसमें जन्म पत्र बनाना, ग्रह स्पष्ट करना, जन्म कुंडली सम्बन्धी फलादेश, दशा अन्तर दशा फलादेश तथा योग दिये हुए हैं।

प्रश्न आफताब :—प्रश्न बतलाने के लिए अत्युत्तम पुस्तक है मूल्य २) रु०

लग्न आफताब :—लग्न निकालने के लिए उत्तम पुस्तक है मूल्य १) रु०

ईलम केरल :—केरल के द्वारा प्रश्न बतलाने की सुगम पुस्तक मूल्य ॥।) आने।

ईलमरमल :—रमल द्वारा फलादेश कहना और कुंडली बनाने की पुस्तक १) रु०

सामुद्रिक :—इस में हस्त रेखा और सामुद्रिक द्वारा मनुष्य के जीवन का हाल मालूम कर सकते हैं मूल्य १॥) रु०।

मनुष्य जीवन का रहस्य :—१) मंत्र शक्ति २) गायत्री शक्ति १॥) लक्ष्मी शक्ति २) सन्यासी टोटके १) डाक व्यय सब के लिए पृथक होगा।

इससे अतिरिक्त अन्य भी ज्योतिष धार्मिक कर्म-काण्ड इत्यादि की पुस्तकें मिल सकती हैं।

कार्यालय ज्योतिष मार्तण्ड माई हीरांगेट जालन्धर शहर

किशन स्टीम प्रेस जालन्धर में छपा